

١٤

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالشُّوْءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلِمَ							
जुल्म हुआ हो	जो - जिस	मगर	बात	बुरी	ज़ाहिर करना	अल्लाह	पसन्द नहीं करता
وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا (148) إِنْ تُبْدُوا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا							
या माफ़ कर दो	या उसे छुपाओ	कोई भलाई	अगर तुम खुल्लम खुल्ला करो	148	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह और है
عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفْوًا قَدِيرًا (149) إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ							
इन्कार करते हैं	जो लोग	वेशक	149	कुदरत वाला	माफ़ करने वाला	है	अल्लाह तो वेशक बुराई से
بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ							
और उस के रसूल	अल्लाह	दरमियान	फर्क निकालें	कि	और चाहते हैं	और उस के रसूलों	अल्लाह का
وَيَقُولُونَ نُوْمُنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ							
कि	और वह चाहते हैं	वाज़ को	और नहीं मानते	वाज़ को	हम मानते हैं	और कहते हैं	
يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا (150) أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا							
असल	काफिर (जमा)	वह	यही लोग	150	एक राह	उस के दरमियान	पकड़ें (निकालें)
وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا (151) وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ							
अल्लाह पर	और जो लोग ईमान लाए	151	ज़िल्लत का	अज़ाब	काफिरों के लिए	और हम ने तैयार किया है	
وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجُورُهُمْ							
उन के अजर	उन्हें देगा	अनक़रीब	यही लोग	उन में से	किसी के	और फर्क नहीं करते दरमियान	और उस के रसूलों पर
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا (152) يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تُنَزِّلَ							
उतार लाए	कि	अहले किताब	आप (स) से सवाल करते हैं	152	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह और है
عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِنْ ذَلِكَ							
उस से	बड़ा	मूसा (अ)	सो वह सवाल कर चुके हैं	आस्मान	से	किताब	उन पर
فَقَالُوا أَرَنَا اللَّهُ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصَّعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ثُمَّ							
फिर	उन के जुल्म के वाइस	बिजली	सो उन्हें आ पकड़ा	अलानिया	अल्लाह	हमें दिखा दे	उन्होंने ने कहा
اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا							
सो हम ने दरगुज़र किया	निशानियां	उन के पास आई	कि	उस के बाद	बछड़ा (गौशाला)	उन्होंने ने बना लिया	
عَنْ ذَلِكَ ۖ وَآتَيْنَا مُوسَىٰ سُلْطَانًا مُّبِينًا (153) وَرَفَعْنَا فَوْقَهُم							
उन के ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	153	ज़ाहिर (सरीह)	ग़लबा	मूसा (अ)	और हम ने दिया	उस से (उस को)
الطُّورَ بِمِيثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا							
और हम ने कहा	सिज्दा करते	दरवाज़ा	तुम दाख़िल हो	उन के लिए (उन से)	और हम ने कहा	उन से अहद लेने की गर्ज़ से	तूर
لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا (154)							
154	मज़बूत	अहद	उन से	और हम ने लिया	हफ़्ते का दिन	में	न ज़ियादती करो उन से

अल्लाह (किसी की) बुरी बात का ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करता मगर जिस पर जुल्म हुआ हो, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (148)

अगर तुम कोई भलाई खुल्लम खुल्ला करो या उसे छुपाओ या माफ़ कर दो कोई बुराई तो वेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, कुदरत वाला है। (149)

वेशक जो लोग इन्कार करते हैं अल्लाह का और उस के रसूलों का और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान फर्क निकालें, और कहते हैं कि हम वाज़ को मानते हैं और वाज़ को नहीं मानते, और वह चाहते हैं कि कुफ़ और ईमान के दरमियान निकालें एक राह। (150)

यही लोग असल काफिर हैं, और हम ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (151)

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी के दरमियान फर्क नहीं करते यही वह लोग हैं अनक़रीब उन्हें (अल्लाह) उन के अजर

देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (152)

अहले किताब आप (स) से सवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से किताब उतार लाएं, सो वह सवाल कर चुके हैं मूसा (अ) से उस से भी बड़ा, उन्होंने ने कहा

हमें अल्लाह को अलानिया (खुल्लम खुल्ला) दिखादे, सो उन्हें बिजली ने आ पकड़ा उन के जुल्म के वाइस, फिर उन्होंने ने बछड़े (गौशाला) को

(माबूद) बना लिया उस के बाद कि उन के पास निशानियां आगई, उस पर भी हम ने उन से दरगुज़र किया, और हम ने मूसा (अ) को सरीह ग़लबा दिया। (153)

और हम ने उन के ऊपर बुलन्द किया “तूर” पहाड़ उन से अहद लेने की गर्ज़ से, और हम ने उन से कहा दरवाज़े में सिज्दा करते हुए दाख़िल हो, और हम ने उन से कहा हफ़्ते के दिन में ज़ियादती न करो, और हम ने उन से मज़बूत अहद लिया। (154)

٢١

(उन को सज़ा मिली) बसबव उन के अहद ओ पैमान तोड़ने, और उन के अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और उन के नबियों को नाहक् क़त्ल करने, और उन के यह कहने (के सबव) कि हमारे दिल पर्दे में (महफूज़) है, बल्कि अल्लाह ने उन पर उन के कुफ़ के सबव मोहर कर दी, सो ईमान नहीं लाते मगर कम। (155)

(और उन को सज़ा मिली) उन के कुफ़ और मरयम (अ) पर बड़ा बुहतान बान्धने के सबव। (156) और उन के यह कहने (के सबव) कि हम ने क़त्ल किया अल्लाह के रसूल ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को, और उन्होंने ने उस को क़त्ल नहीं किया और उन्होंने ने उस को सूली नहीं दी बल्कि उन के लिए (उन जैसी) सूत बना दी गई और वेशक जो लोग उस (बारे) में इख़्तिलाफ़ करते हैं वह अलबत्ता उस बारे में शक में हैं, अटकल की पैरवी के सिवा उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, और उस (अ) को उन्होंने ने यकीनन क़त्ल नहीं किया, (157)

बल्कि अल्लाह ने उस (अ) को अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (158) और कोई अहले किताब से न रहेगा मगर उस (अ) पर अपनी मौत से पहले ज़रूर ईमान लाएगा, और क़ियामत के दिन वह (अ) उन पर गवाह होंगे। (159)

सो हम ने यहूदियों पर (बहुत सी) पाक चीज़ों जो उन के लिए हलाल थीं हाराम कर दी उन के जुल्म की वजह से और उन के अल्लाह के रास्ते से बहुत रोकने की वजह से, (160) और उन के सूद लेने (की वजह से) हालांकि वह उस से रोक दिए गए थे और (इस वजह से) कि वह खाते थे लोगों के माल नाहक्, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (161)

लेकिन उन में से जो इल्म में पुख़्ता है, और जो मोमिन है वह उस को मानते हैं जो नाज़िल किया गया आप (स) की तरफ़ और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया, और नमाज़ काइम रखने वाले हैं और अदा करने वाले हैं ज़कात और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वाले हैं, ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अजर देंगे। (162)

فَبِمَا نَفْسِهِمْ مِّيشَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بَايَتِ اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ						
नबियों (जमा)	और उन का क़त्ल करना	अल्लाह की आयत	और उन का इन्कार करना	अपना अहद ओ पैमान	उन का तोड़ना	बसबव
بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ						
उन के कुफ़ के सबव	उन पर	मोहर कर दी अल्लाह ने	बल्कि	पर्दे में	हमारे दिल (जमा)	और उन का कहना
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝۱۵۵ وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ						
मरयम (अ)	पर	और उन का कहना (बान्धना)	और उन के कुफ़ के सबव	155	कम	मगर
بُهْتَانًا عَظِيمًا ۝۱۵۶ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَىٰ ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ						
रसूल	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	मसीह (अ)	हम ने क़त्ल किया	हम	और उन का कहना
اللَّهُ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا						
जो लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं	और वेशक	उन के लिए	सूरत बना दी गई	और बल्कि	और नहीं सूली दी उस को	और नहीं क़त्ल किया उस को
فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ						
पैरवी	मगर	कोई इल्म	उस का	नहीं उन को	उस से	अलबत्ता शक में
الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝۱۵۷ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا						
ग़ालिब	अल्लाह	और है	अपनी तरफ़	अल्लाह	उस को उठा लिया	बल्कि
حَكِيمًا ۝۱۵۸ وَإِنْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ						
अपनी मौत	पहले	उस पर	ज़रूर ईमान लाएगा	मगर	अहले किताब	से
وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝۱۵۹ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا						
जो यहूदी हुए (यहूदी)	से	सो जुल्म के सबव	159	गवाह	उन पर	होगा
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ						
अल्लाह का रास्ता	से	और उन के रोकने की वजह से	उन के लिए	हलाल थी	पाक चीज़ें	उन पर
كَثِيرًا ۝۱۶۰ وَأَخَذَهُمُ الرَّبُّوا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ						
लोग	माल (जमा)	और उन का खाना	उस से	हालांकि वह रोक दिए गए थे	सूद	और उन का लेना
بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝۱۶۱ لَكِنِ						
लेकिन	161	दर्दनाक	अज़ाब	उन में से	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया
الرَّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ						
आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	जो	वह मानते हैं	और मोमिनीन	उन में से	इल्म में
وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ						
ज़कात	और अदा करने वाले	नमाज़	और काइम रखने वाले	आप (स) से पहले	से	नाज़िल किया गया
وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝۱۶۲						
162	बड़ा	अजर	हम ज़रूर देंगे उन्हें	यही लोग	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ								
वेशक हम	हम ने वहि भेजी	आप (स) की तरफ़	जैसे	हम ने वहि भेजी	तरफ़	नूह (अ)	और नवियों	उस के बाद
وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ								
और हम ने वहि भेजी	तरफ़	इब्राहीम (अ)	और इस्माईल (अ)	और इसहाक़ (अ)	और याकूब (अ)	और याकूब (अ)		
وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَنَ								
और औलादे याकूब	और ईसा (अ)	और अय्यूब (अ)	और यूनस (अ)	और हारून (अ)	और सुलैमान (अ)	और सुलैमान (अ)		
وَاتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ								
और हम ने दी	दाऊद (अ)	ज़बूर	163	और ऐसे रसूल (जमा)	हम ने उन का अहवाल सुनाया	आप (स) पर (आप से)		
مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ								
इस से क़व्ल	और ऐसे रसूल	नहीं	हम ने हाल बयान किया	आप पर (आप को)	और कलाम किया	अल्लाह	मूसा (अ)	
تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾ رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ								
कलाम करना (खूब)	164	रसूल (जमा)	खुशख़बरी सुनाने वाले	और डराने वाले	ताकि न रहे	लोगों के लिए		
عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾								
पर	अल्लाह	हुज्जत	रसूलों के बाद	और है अल्लाह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	165	
لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلَكُ								
लेकिन	अल्लाह	गवाही देता है	उस पर जो	उस ने नाज़िल किया	आप (स) की तरफ़	वह नाज़िल किया	अपने इल्म के साथ	
يَشْهَدُونَ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا								
गवाही देते हैं	और काफी है	अल्लाह	गवाह	166	वेशक	वह लोग जो	उन्होंने ने कुफ़ किया	
وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ								
और उन्होंने ने रोका	से	अल्लाह का रास्ता	तहकीक़ वह गुमराही में पड़े	गुमराही	दूर	वेशक	167	
الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ								
वह लोग जो	उन्होंने ने कुफ़ किया	और जुल्म किया	नहीं है	अल्लाह	कि बख़्शदे	उन्हें	और न	
طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَكَانَ ذَلِكَ								
रास्ता (सीधा)	168	मगर	रास्ता	जहन्नम	रहेंगे	उस में	हमेशा	
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾ يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرُّسُولُ بِالْحَقِّ								
अल्लाह पर	आसान	169	ऐ	लोग	तुम्हारे पास आया	रसूल	हक़ के साथ	
مِنْ رَبِّكُمْ فَأَمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۖ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ مَا								
से	तुम्हारा रब	सो ईमान लाओ	बेहतर	तुम्हारे लिए	और अगर	तुम न मानोगे	तो वेशक	
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾								
आस्मानों में	और ज़मीन	और है	अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला	170		

वेशक हम ने आप (स) की तरफ़ वहि भेजी है जैसे हम ने वहि भेजी थी नूह (अ) की तरफ़ और उस के बाद नवियों की तरफ़ और हम ने वहि भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक़ (अ), याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ़ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ़ वहि भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। (163)							
और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से क़व्ल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (खूब) कलाम किया (164)							
(हम ने भेजे) रसूल खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (165)							
लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ़ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफी है। (166)							
वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहकीक़ वह गुमराही में दूर जा पड़े। (167)							
वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और जुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, (168)							
मगर जहन्नम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (169)							
ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ रसूल (स) आगया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो वेशक जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (170)							

वेशक हम ने आप (स) की तरफ वहि भेजी है जैसे हम ने वहि भेजी थी नूह (अ) की तरफ और उस के बाद नवियों की तरफ और हम ने वहि भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक (अ), याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ वहि भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। (163)

और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से कबल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (खूब) कलाम किया (164)

(हम ने भेजे) रसूल खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (165)

लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफी है। (166)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहकीक़ वह गुमराही में दूर जा पड़े। (167)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और जुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, (168)

मगर जहन्नम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (169)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से हक के साथ रसूल (स) आया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो वेशक जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (170)

ऐ अहले किताब! अपने दीन में गुलू न करो (हद से न बढ़ो) और न कहो अल्लाह के बारे में हक के सिवा, इस के सिवा नहीं कि मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उस का कलिमा, जिस को मरयम की तरफ डाला और उस (की तरफ) से आत्मा है, सो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो (खुदा) तीन हैं, (उस से) बाज़ रहो, तुम्हारे लिए बेहतर है, इस के सिवा नहीं (वेशक) कि अल्लाह माबूदे वाहिद है और उस से पाक है कि उस की औलाद हो। जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है उस का है, और अल्लाह कारसाज़ काफी है। (171)

मसीह (अ) को हरगिज़ आर (शर्म) नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो, और न मुक़र्रिब फ़रिशतों को (आर है) और जो कोई उस (अल्लाह) की बन्दगी से आर और तकब्बुर करे तो वह अ़नक़रीब उन्हें अपने पास जमा करेगा सब को। (172)

फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अ़मल किए वह उन्हें उन के अज़र पूरे पूरे देगा और उन्हें ज़ियादा देगा अपने फ़ज़ल से, और जिन लोगों ने (बन्दगी को) आर समझा और तकब्बुर किया तो वह उन्हें अ़ज़ाब देगा, दर्दनाक अ़ज़ाब। और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाएंगे कोई दोस्त और न मदद्गार। (173)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रौशन दलील आ चुकी और हम ने तुम्हारी तरफ नाज़िल की है वाज़ेह रौशनी। (174)

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने ने उस को मज़बूती से पकड़ा, वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा अपनी रहमत और फ़ज़ल में, और उन्हें अपनी तरफ सीधे रास्ते की हिदायत देगा। (175)

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ										
पर (बारे में) अल्लाह		और न कहो		अपने दीन में		गुलू न करो		ऐ अहले किताब		
إِلَّا الْحَقُّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ										
और उस का कलिमा		अल्लाह	रसूल	इब्ने मरयम (अ)		ईसा	मसीह	इस के सिवा नहीं	हक्	सिवाए
الْقَهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا										
और न	और उस के रसूल	अल्लाह पर	सो ईमान लाओ	उस से	और रूह	मरयम (अ)	तरफ	उस को डाला		
تَقُولُوا ثَلَاثَةً انْتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهُ وَاحِدٌ										
माबूदे वाहिद		अल्लाह	इसके सिवा नहीं	तुम्हारे लिए	बेहतर	बाज़ रहो	तीन	कहो		
سُبْحَنَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا										
और जो	आस्मानों में			जो	उस का	औलाद	उस की	हो	कि	वह पाक है
فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ										
कि	मसीह (अ)	हरगिज़ आर नहीं			171	कारसाज़	अल्लाह	और काफी है	ज़मीन में	
يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا الْمَلِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ وَمَنْ يَسْتَنْكِفَ										
आर करे		और जो	मुक़र्रब (जमा)		फ़रिशते	और न	अल्लाह का	बन्दा	हो	
عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ﴿١٧٢﴾ فَمَا										
फिर जो	172	सब	अपने पास	तो अ़नक़रीब उन्हें जमा करेगा		और तकब्बुर करे		उस की इबादत	से	
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ										
उन के अजर		उन्हें पूरा देगा		नेक		ईमान लाए और उन्होंने ने अ़मल किए		लोग		
وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنَكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا										
और उन्होंने ने तकब्बुर किया		उन्होंने आर समझा		वह लोग जो		और फिर	अपना फ़ज़ल	से	और उन्हें ज़ियादा देगा	
فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ										
अल्लाह के सिवा		से (के)	अपने लिए	और वह न पाएंगे		दर्दनाक	अज़ाब	तो उन्हें अ़ज़ाब देगा		
وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾ يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ										
रौशन दलील		तुम्हारे पास आ चुकी		ऐ लोगो!		173	मदद्गार	और न	दोस्त	
مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ﴿١٧٤﴾ فَمَا الَّذِينَ آمَنُوا										
जो लोग ईमान लाए		पस	174	वाज़ेह	रौशनी	तुम्हारी तरफ़	और हम ने नाज़िल किया	तुम्हारा रब	से	
بِاللَّهِ وَاعْتَصِمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ										
रहमत में		वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा			उस को	और मज़बूत पकड़ा		अल्लाह पर		
مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٧٥﴾										
175	सीधा		रास्ता		अपनी तरफ़	और उन्हें हिदायत देगा		और फ़ज़ल	उस से (अपनी)	

١٧١  
١٧٢  
١٧٣  
١٧٤  
١٧٥



يَسْتَفْثُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنْ امْرُؤًا هَلَكَ									
मर जाए	कोई मर्द	अगर	कलाला (के बारे) में	तुम्हें हुक्म बताता है	अल्लाह	कह दें	आप से हुक्म दरयापत करते हैं		
لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتُ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا									
उस का वारिस होगा	और वह	जो उस ने छोड़ा (तर्का)	निसफ (1/2)	तो उस के लिए	एक बहन	और उस की हो	उस की कोई औलाद	न हो	
إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُسُ مِمَّا									
उस से जो	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो बहनें	हों	फिर अगर	कोई औलाद	उस की	न हो	अगर
تَرَكَ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حَظِّ									
हिस्सा	बराबर	तो मर्द के लिए	और कुछ औरतें	कुछ मर्द	भाई बहन	हों	और अगर	उस ने छोड़ा (तर्का)	
الْأُنثَيْنِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾									
176	जानने वाला	चीज़	हर	और अल्लाह	ताकि भटक न जाओ	तुम्हारे लिए	अल्लाह	खोल कर बयान करता है	दो औरत
آيَاتُهَا ١٢٠ ﴿٥﴾ سُورَةُ الْمَائِدَةِ ﴿١٧٦﴾ زُكُوعَاتُهَا ١٦									
रुकुआत 16			(5) सूरतुल माइदा खान				आयात 120		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ									
चौपाए	हलाल किए गए तुम्हारे लिए	अहद-कौल	पूरा करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ				
الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ غَيْرِ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	एहराम में हो	जब कि तुम	हलाल जाने हुए शिकार	मगर	पढ़े जाएंगे (सुनाए जाएंगे) तुम्हें	जो	सिवाए	मवेशी	
يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا									
और न	अल्लाह की निशानियां	हलाल न समझो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	1	जो चाहे	हुक्म करता है		
الشَّهْرِ الْحَرَامِ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ									
एहताराम वाला घर (खाने कअवा)	कसद करने वाले (आने वाले)	और न	गले में पट्टा डाले हुए	और न	नियाजे कअवा	और न	महीने अदब वाले		
يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا									
तो शिकार कर लो	एहराम खोल दो	और जब	और खुशनुदी	अपने रब से	फज़ल	वह चाहते हैं			
وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَا نَقَوْمٍ أَنْ صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ									
मसजिद हराम (खाने कअवा)	से	तुम को रोकती थी	जो	कौम	दुश्मनी	तुम्हारे लिए बाइस हो	और न		
أَنْ تَعْتَدُوا وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ									
गुनाह	पर (में)	और एक दूसरे की मदद न करो	और तक्रवा (परहेज़गारी)	नेकी पर (में)	और एक दूसरे की मदद करो	कि तुम ज़ियादती करो			
وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾									
2	अज़ाब	सख़्त	वेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से	और ज़ियादती (सरकशी)				

आप (स) से हुक्म दरयापत करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई (ऐसा) मर्द मर जाए जिस की कोई औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो उस (बहन) को उस के तरके का निसफ़ मिलेगा, और वह उस का वारिस होगा अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो, फिर अगर (मरने वाले की) दो बहनें हों तो उन के लिए दो तिहाई है उस (भाई) के तरके में से, और अगर भाई बहन कुछ मर्द और कुछ औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान करता है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (176)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! अपने अहद पूरे करो, तुम्हारे लिए चौपाए मवेशी हलाल किए गए सिवाए उन के जो तुम्हें सुनाए जाएंगे, मगर शिकार को हलाल न जानो जबकि तुम (हालते) एहराम में हो, वेशक अल्लाह जो चाहे हुक्म करता है। (1)

ऐ ईमान वालो! शआएर अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) हलाल न समझो और न अदब वाले महीने (जुलकअदह, जुलहिज्जह, मोहर्रम, रज्जब) और न नियाजे कअवा (के जानवर) और न गले में (कुरबानी के) पट्टा डाले हुए, और न आने वाले खाने कअवा को जो अपने रब का फज़ल और खुशनुदी चाहते हैं। और जब एहराम खोलदो (चाहो) तो शिकार करलो, और (उस) कौम की दुश्मनी जो तुम को रोकती थी मसजिदे हराम (खाने कअवा) से (उस का) बाइस न बने कि तुम ज़ियादती करो। और एक दूसरे की मदद करो नेकी और परहेज़गारी में, और एक दूसरे की मदद न करो गुनाह और सरकशी में, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है। (2)

हराम कर दिया गया तुम पर मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर पुकारा गया अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम), और गला घोटने से मरा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और गिर कर मरा हुआ और सींग मारा हुआ, और जिस को दरिन्दे ने खाया हो मगर जो तुम ने जुवह कर लिया, और (हराम किया गया) जो आसथाने (परस्तिश गाहों) पर जुवह किया गया, और यह कि तुम तीरों से (पांसे डाल कर) तकसीम करो, यह गुनाह है। आज काफ़िर तुम्हारे दिन से मायूस हो गए, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो, आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दिन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हेसियत से पसन्द किया। फिर जो भूक में लाचार हो जाए (लेकिन) माइल न हो गुनाह की तरफ़ (उस के लिए गुंजाइश है) वेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (3)

आप (स) से पूछते हैं उन के लिए क्या हलाल किया गया है? कह दें तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गई हैं और जो तुम शिकारी जानवर सधाओ शिकार पर दौड़ाने को कि तुम उन्हें सिखाते हो उस से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, पस उस में से खाओ जो वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें, और उस पर अल्लाह का नाम लो (जुवह कर लो) और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (4)

आज तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गई, और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है, और पाक दामन मोमिन औरतें और पाक दामन औरतें उन में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई (हलाल हैं), जब तुम उन्हें उन के मेहर दे दो (कैदे निकाह) में लाने को, न कि मस्ती निकालने को और न चोरी छुपे आशनाई करने को, और जो ईमान का मुन्क़िर हुआ उस का अमल जाया हुआ, और वह आखिरत में नुक़सान उठाने वालों में से है। (5)

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أَهْلٌ						
पुकारा गया	और जो-जिस	और सुव्वर का गोश्त	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम कर दिया गया
لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا						
और जो-जिस	और सींग मारा हुआ	और गिर कर मरा हुआ	और चोट खाकर मरा हुआ	और गला घोटने से मरा हुआ	उस पर	अल्लाह के सिवा
أَكَلَ السَّبْعِ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۖ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ ۚ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا						
तुम तकसीम करो	और यह कि	थानों पर	जुवह किया गया	और जो	तुम ने जुवह कर लिया	मगर जो
بِالْأَزْلَامِ ۚ ذَلِكُمْ فَسْقُ الْيَوْمِ الْيَسِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ						
तुम्हारे दिन से	जिन लोगो ने कुफ़ किया (काफ़िर)	मायूस हो गए	आज	गुनाह	यह	तीरों से
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۚ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتِمَمْتُ						
और पूरी कर दी	तुम्हारा दिन	तुम्हारे लिए	मैं ने मुकम्मल कर दिया	आज	और मुझ से डरो	सो तुम उन से न डरो
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِي						
में	लाचार हो जाए	फिर जो	दीन	इस्लाम	तुम्हारे लिए	और मैं ने पसन्द किया
مَخْمَصَةٍ غَيْرِ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣﴾ يَسْأَلُونَكَ						
आप (स) से पूछते हैं	3	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो वेशक अल्लाह	गुनाह की तरफ़	माइल हो
مَاذَا أَحَلَّ لَهُمْ ۚ قُلْ أَحَلَّ لَكُمْ الطَّيِّبُ ۚ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ						
शिकारी जानवर	से	तुम सुधाओ	और जो	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गई
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۚ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكَنَّ عَلَيْكُمْ						
तुम्हारे लिए	वह पकड़ रखें	उस से जो	पस तुम खाओ	अल्लाह	तुम्हें सिखाया	उस से जो
وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾						
4	तेज़ हिसाब लेने वाला	वेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरो	उस पर	अल्लाह
الْيَوْمَ أَحَلَّ لَكُمْ الطَّيِّبُ ۚ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَلْلٌ						
हलाल	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	और खाना	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गई
لَكُمْ ۚ وَطَعَامُكُمْ حَلْلٌ لَهُمْ ۚ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ						
और पाक दामन	मोमिन औरतें	से	और पाक दामन औरतें	उन के लिए	हलाल	और तुम्हारा खाना
مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ ۚ إِذَا اتَّيَمُّوهُنَّ أَجُورَهُنَّ						
उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जो	से
مُحْصَنِينَ غَيْرِ مُسْفَحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ						
मुन्क़िर हुआ	और जो	छुपी आशनाई	और न बनाने को	न कि मस्ती निकालने को	कैदे में लाने को	
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ ۚ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٥﴾						
5	नुक़सान उठाने वाले	से	आखिरत में	और वह	उस का अमल	तो जाया हुआ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا						
तो धो लो	नमाज़ के लिए	तुम उठो	जब	वह जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	
وَأُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ						
और अपने पाऊँ	अपने सरों का	और मसह करो	कुहनियाँ	तक	और अपने हाथ	अपने मुँह
إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا وَإِنْ كُنْتُمْ						
तुम हो	और अगर	तो खूब पाक हो जाओ	नापाक	तुम हो	और अगर	टखनों तक
مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُم مِّنَ الْغَايِطِ						
वैतुलखला से	तुम में से	कोई	आए	और	सफ़र पर (में)	या बीमार
أَوْ لِمَسْتُمِ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا						
मिट्टी	तो तयम्मूम कर लो	पानी	फिर न पाओ	औरतों से	या तुम मिलो (सुहबत की)	
طَيِّبًا فَاْمَسَحُوا بِأُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ مِنْهُ مَا يُرِيدُ اللَّهُ						
अल्लाह	नहीं चाहता	उस से	और अपने हाथ	अपने मुँह	तो मसह करो	पाक
لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ						
कि तुम्हें पाक करे	चाहता है	और लेकिन	तंगी	कोई	तुम पर	कि करे
وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٦﴾ وَاذْكُرُوا						
और याद करो	6	एहसान मानो	ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत	और यह कि पूरी करे
نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ						
उस से	तुम ने बान्धा	जो	और उस का अहद	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह की नेमत	
إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ						
वात	जानने वाला	वेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	और हम ने माना	हम ने सुना	जब तुम ने कहा
الصُّدُورِ ﴿٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوِّمِينَ لِلَّهِ						
अल्लाह के लिए	खड़े होने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	7	दिलों की
شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلَىٰ						
पर	किसी क़ौम	दुश्मनी	और तुम्हें न उभारे	इन्साफ़ के साथ	गवाह	
أَلَّا تَعْدِلُوا ۖ إِعْدِلُوا ۖ هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا						
और डरो	तक़्वा के	ज़ियादा करीब	वह (यह)	तुम इन्साफ़ करो	कि इन्साफ़ न करो	
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا						
जो लोग ईमान लाए	अल्लाह	वादा किया	8	जो तुम करते हो	खूब बाख़्बर	वेशक अल्लाह
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٩﴾						
9	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो धो लो अपने मुँह और अपने हाथ कुहनियों तक और अपने सरों का मसह करो और अपने पाऊँ (धो) टखनों तक, और अगर तुम नापाक हो (गुस्ल की हाज़त हो) तो खूब पाक हो जाओ (गुस्ल कर लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई वैतुलखला से आए या तुम ने औरतों से सुहबत की, फिर न पाओ पानी तो पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो (यानी) उस से अपने मुँह और हाथों का मसह करो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी करे लेकिन चाहता है कि तुम्हें पाक करे और यह कि अपनी नेमत पूरी करे तुम पर ताकि तुम एहसान मानो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो और उस का अहद जो तुम ने उस से बान्धा जब तुम ने कहा हम ने सुना और हम ने माना, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह दिलों की बात जानने वाला है। (7)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए खड़े होने वाले हो जाओ इन्साफ़ की गवाही देने को, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें (उस पर) न उभारे कि इन्साफ़ न करो, तुम इन्साफ़ करो यह तक़्वा के ज़ियादा करीब है, और अल्लाह से डरो, वेशक तुम जो करते हो अल्लाह उस से खूब बाख़्बर है। (8)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए अल्लाह ने वादा किया कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (9)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही जहन्नम वाले हैं। (10)

ऐ ईमान वाले! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (एहसान) याद करो जब एक गिरोह ने इरादा किया कि वह बढ़ाएं तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (दस्त दराज़ी करने को) तो उस ने तुम से उन के हाथ रोक दिए, और अल्लाह से डरो, और चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करें ईमान वाले। (11)

और अलबत्ता अल्लाह ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया, और हम ने उन में से मुक़र्रर किए बारह (12) सरदार, और अल्लाह ने कहा मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ काइम रखोगे और देते रहोगे ज़कात और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और अल्लाह को कर्ज़ हसना (अच्छा कर्ज़) दोगे, मैं तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करदूंगा और तुम्हें (उन) बागात में ज़रूर दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, फिर उस के बाद तुम में से जिस ने कुफ़ किया वेशक वह सीधे रास्ते से गुमराह हुआ। (12)

सो उन के अ़हद तोड़ने पर हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख़्त कर दिया, वह कलाम को उस के मवाक़े से फेर देते हैं (बदल देते) हैं और वह भूल गए (फ़रामोश कर बैठे) उस का बड़ा हिस्सा जिस की उन्हें नसीहत की गई थी, और आप (स) उन में से थोड़ों के सिवा हमेशा उनकी ख़ियानत पर ख़बर पाते रहते हैं, सो उन को माफ़ कर दें और दरगुज़र करें, वेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (13)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ (١٠)					
और जिन लोगों ने कुफ़ किया	और झुटलाया	हमारी आयतें	यही	जहन्नम वाले	10
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ					
ऐ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	तुम याद करो	नेमत	अल्लाह	अपने ऊपर
إِذْ هُمْ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ					
जब इरादा किया	एक गिरोह	कि	बढ़ाएं	तुम्हारी तरफ़	अपने हाथ
أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ					
उन के हाथ	तुम से	और डरो	अल्लाह	और पर	अल्लाह
الْمُؤْمِنُونَ (١١) وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ					
ईमान वाले	11	और अलबत्ता	अल्लाह ने लिया	अ़हद	बनी इस्राईल
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ					
और हम ने मुक़र्रर किए	उन से	बारह (12)	सरदार	और कहा	अल्लाह
لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ					
अगर	काइम रखोगे	नमाज़	और देते रहोगे	ज़कात	और ईमान लाओगे
بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا					
मेरे रसूलों पर	और उन की मदद करोगे	और कर्ज़ दोगे	अल्लाह	कर्ज़	हसना
لَا كُفْرَانَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَا دُخْلَكُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي					
मैं ज़रूर दूर करदूंगा	तुम से	तुम्हारे गुनाह	और ज़रूर दाख़िल कर दूंगा तुम्हें	बागात	बहती है
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ					
से	उन के नीचे	नहरें	फिर जो-जिस	कुफ़ किया	उस के बाद
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ (١٢) فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ					
वेशक गुमराह हुआ	सीधा	रास्ता	12	सो बसबव (पर)	उनका तोड़ना
لَعْنُهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَسِيَّةً يَحْرِفُونَ الْكَلِمَ عَنْ					
हम ने उन पर लानत की	और हम ने कर दिया	उन के दिल (जमा)	सख़्त	वह फेर देते हैं	कलाम
مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ وَلَا تَزَالُ					
उस के मवाक़े	और वह भूल गए	एक बड़ा हिस्सा	उस से जो	उन्हें जिस की नसीहत की गई	और हमेशा
تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ					
आप ख़बर पाते रहते हैं	पर	ख़ियानत	उन से	सिवाए	थोड़े
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (١٣)					
सो माफ़ कर	उन को	और दरगुज़र कर	वेशक अल्लाह	दोस्त रखता है	एहसान करने वाले



وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ					
उन का अहद	हम ने लिया	नसारा	हम	जिन लोगो ने कहा	और से
فَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ					
उन के दरमियान	तो हम ने लगा दी	जिस की नसीहत की गई थी	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	फिर वह भूल गए
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ وَسَوْفَ					
और जल्द	रोज़े कियामत	तक	और बुग़ज़	अ़दावत	
يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ					
ऐ अहले किताब	14	करते थे	जो वह	अल्लाह	उन्हें जता देगा
قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا					
बहुत सी बातें जो	तुम्हारे लिए	वह ज़ाहिर करते हैं	हमारे रसूल	यकीनन तुम्हारे पास आगए	
كُنْتُمْ تَخْفَوْنَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ					
बहुत उमूर से	और वह दरगुज़र करता है	किताब से	छुपाते	तुम थे	
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾					
15	रौशन	और किताब	नूर	अल्लाह से	तहकीक तुम्हारे पास आगया
يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ					
सलामती	राहें	उस की रज़ा	जो तावे हुआ	अल्लाह	उस से हिदायत देता है
وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ					
अपने हुक्म से	नूर की तरफ़	अन्धेरे	से	और वह उन्हें निकालता है	
وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ					
तहकीक काफ़िर हो गए	16	सीधा	रास्ता	तरफ़	और उन्हें हिदायत देता है
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ					
इब्ने मरयम	वही मसीह (अ)		बेशक अल्लाह	जिन लोगो ने कहा	
قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ					
हलाक कर दे	अगर वह चाहे कि	कुछ भी	अल्लाह के आगे	बस चलता है	तो किस कह दीजिए
الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا					
सब	ज़मीन	में	और जो	और उस की माँ	इब्ने मरयम मसीह (अ)
وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ					
वह पैदा करता है	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए सल्तनत
مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾					
17	कादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जो वह चाहता है

और उन लोगों से जिन्होंने ने कहा हम नसारा हैं, हम ने उन का अहद लिया, फिर वह उस का बड़ा हिस्सा भूल गए जिस की उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उन के दरमियान लगा दिया (डाल दिया) रोज़े कियामत तक अदावत और बुगज़, और अल्लाह जल्द उन्हें जता देगा जो वह करते थे। (14)

ऐ अहले किताब! यकीनन तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आगए, वह तुम्हारे लिए (तुम पर) बहुत सी बातें ज़ाहिर करते हैं जो तुम किताब में से छुपाते थे और वह बहुत उमूर से दरगुज़र करते हैं, तहकीक तुम्हारे पास आगया अल्लाह की तरफ से नूर और रौशन किताब। (15)

उस से अल्लाह सलामती की राहों की उसे हिदायत देता है जो उस की रज़ा के तावे हुआ और वह उन्हें निकालता है अन्धेरे से नूर की तरफ अपने हुक्म से और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देता है। (16)

तहकीक काफिर हो गए वह जिन लोगों ने कहा अल्लाह वही मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) है। कह दीजिए: तो किस का बस चलता है अल्लाह के आगे कुछ भी। अगर वह चाहे कि मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) को और उस की माँ को हलाक कर दे और जो ज़मीन में है सब को। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, वह पैदा करता है जो वह चाहता है, और अल्लाह हर शै पर कादिर है। (17)

और यहूद ओ नसारा ने कहा हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, कह दीजिए फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सज़ा क्यों देता है? (नहीं) बल्कि तुम भी एक बशर हो उस की मख़लूक़ में से, वह जिस को चाहता है बख़्श देता है और जिस को चाहता है अज़ाब देता है। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (18)

ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आ गए वह नवियों का सिलसिला टूट जाने के बाद तुम पर खोल कर बयान करते हैं कि कहीं तुम यह कहो हमारे पास कोई खुशख़बरी सुनाने वाला नहीं आया और न डराने वाला, तहकीक़ तुम्हारे पास (मुहम्मद (स) खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले आगए, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (19)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को कहा: ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो जब उस ने तुम में नबी बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें दिया जो ज़हानों में किसी को नहीं दिया। (20)

ऐ मेरी क़ौम! अर्ज़ मुक़द्दस में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पीठ फेरते हुए न लौटो वरना तुम नुक़सान में जा पड़ोगे। (21)

उन्होंने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक उस में एक ज़बरदस्त क़ौम है, और हम वहाँ हरगिज़ दाख़िल न होंगे यहाँ तक कि वह उस में से निकल जाएं, फिर अगर वह उस में से निकले तो हम ज़रूर उस में दाख़िल होंगे। (22)

डरने वालों में से दो आदमियों ने कहा, उन दोनों पर अल्लाह ने इन्शाम किया था: कि तुम उन पर दरवाज़े से (हमला कर के) दाख़िल हो जाओ, जब तुम उस में दाख़िल होंगे तो तुम ही ग़ालिब होंगे, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। (23)

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ قُل فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ								
और कहा	यहूद	और नसारा	हम	बेटे	अल्लाह	और उस के प्यारे	कह दीजिए	फिर क्यों
तुम्हें अज़ाब देता है	तुम्हारे गुनाहों पर	बल्कि	तुम	बशर	उन में से	उस ने पैदा किया (मखलूक)	वह बख़्श देता है	जिस को चाहता है
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا								
और अज़ाब देता है	जिस को वह चाहता है	और अल्लाह के लिए	सल्तनत	आस्मानों	और ज़मीन	और जो	हमारे रसूल	तहकीक तुम्हारे पास आए
उन दोनों के दरमियान	और उसी की तरफ़	लौट कर जाना है	18	ऐ अहले किताब	तहकीक तुम्हारे पास आए	हमारे रसूल		
वह खोल कर बयान करते हैं	तुम्हारे लिए	पर (बाद)	सिलसिला टूट जाना	से (के)	रसूल (जमा)	कि कहीं	तुम कहो	हमारे पास नहीं आया
وَلَا نَذِيرُ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٩﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ								
क़ादिर	19	और जब	कहा	मूसा	अपनी क़ौम को	ऐ मेरी क़ौम	तुम याद करो	अल्लाह की नेमत
अपने ऊपर	जब	उस ने बनाया	तुम में	नबी (जमा)	और तुम्हें बनाया	बादशाह	और तुम्हें दिया	
مَا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٠﴾ يُقَوْمِ ادْخُلُوا								
जो नहीं	दिया	किसी को	से	जहानों में	20	ऐ मेरी क़ौम	दाख़िल हो जाओ	
الْأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ								
अर्ज़ मुक़द्दस (उस पाक सर ज़मीन)	जो	अल्लाह ने लिख दी	तुम्हारे लिए	और न	लौटो	पर	अपनी पीठ	
فَتَنَقَّلُوا خَسِرِينَ ﴿٢١﴾ قَالُوا يَمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ								
वरना तुम जा पड़ोगे	नुक़सान में	21	उन्होंने कहा	ऐ मूसा (अ)	बेशक उस में	एक क़ौम	ज़बरदस्त	
وَأَنَّا لَنَدْخُلُهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا								
और हम बेशक	हरगिज़ दाख़िल न होंगे	यहां तक कि	वह निकल जाएं	उस से	फिर अगर	वह निकले	उस से	
فَإِنَّا دُخِلُونَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنَّ اللَّهَ								
तो हम ज़रूर	दाख़िल होंगे	22	कहा	दो आदमी	उन लोगों से जो	डरने वाले	अल्लाह ने इन्शाम किया था	
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابُ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَانْكُم								
उन दोनों पर	तुम दाख़िल हो उन पर (हमला कर दो)	दरवाज़ा	पस जब	तुम दाख़िल होगे उस में	तो तुम			
غَلِبُونَهُ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنَّ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾								
ग़ालिब आओगे	और अल्लाह पर	भरोसा रखो	अगर तुम हो	ईमान वाले	23			

قَالُوا يَمُوسَى إِنَّا لَن نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا فَادْهَبْ							
उन्होंने ने कहा	ऐ मूसा	वेशक हम	हरगिज़ वहाँ दाखिल न होंगे	कभी भी	जब तक वह हैं	उस में	सो जा
أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَهُنَا قُعْدُونَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي							
तू	और तेरा रब	तुम दोनों लड़ो	हम	यही	बैठे हैं	मूसा (अ) ने कहा	ऐ मेरे रब
لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ							
इख्तियार नहीं रखता	अपनी जान के सिवा	और अपना भाई	पस जुदाई कर दे	हमारे दरमियान	और दरमियान	कौम	
الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَإِنَّهَا مُّحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً							
नाफरमान	25	उस ने कहा	पस यह	हराम कर दी गई	उन पर	चालीस	साल
يَتِيَهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾							
भटकते फिरेंगे	ज़मीन में	तू अफ़सोस न कर	पर	कौम	नाफ़रमान	26	
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَى آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ							
और सुना	उन्हें	ख़बर	आदम के दो बेटे	अहवाल-ए-वाक़्ज़ी	जब दोनों ने पेश की	कुछ नियाज़	तो कुबूल कर ली गई
مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ							
से	उन में से एक	और न कुबूल की गई	दूसरे से	उस ने कहा	मैं तुझे ज़रूर मार डालूँगा	उस ने कहा	
إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾ لَبِئْسَ بَسِطَتِ إِلَيَّ يَدَكَ							
वेशक सिर्फ़	कुबूल करता है	अल्लाह	से	परहेज़गार (जमा)	27	अलबत्ता अगर तू बढ़ाएगा	मेरी तरफ़
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدَيَّ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَنَّكَ إِنِّي أَخَافُ							
कि मुझे क़त्ल करे	मैं नहीं	बढ़ाने वाला	अपना हाथ	तेरी तरफ़	कि तुझे क़त्ल करूँ	वेशक मैं	डरता हूँ
اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي							
अल्लाह	परवरदिगार सारे ज़हान का	28	वेशक मैं	चाहता हूँ	कि तू हासिल करे	मेरे गुनाह	
وَأِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾							
और अपने गुनाह	फिर तू हो जाए	से	जहन्नम वाले	और यह	सज़ा	ज़ालिम (जमा)	29
فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٠﴾							
फिर राज़ी किया	उस को	उस का नफ़्स	क़त्ल	अपना भाई	सो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	तो वह हो गया	से
فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُورَى							
फिर भेजा	अल्लाह	एक कव्वा	कुरेदता था	ज़मीन में	ताकि उसे दिखाए	कैसे	वह छुपाए
سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يُؤَيِّلَتِي أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا							
लाश	अपना भाई	उस ने कहा	हाए अफ़सोस मुझ पर	मुझ से न हो सका	कि मैं हो जाऊँ	जैसा	इस-यह
الْغُرَابِ فَأَوْارَى سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣١﴾							
कव्वा	फिर छुपाऊँ	लाश	अपना भाई	पस वह हो गया	से	नादिम होने वाले	31

उन्होंने ने कहा ऐ मूसा (अ)! जब तक वह उस में हैं हम वहाँ कभी भी हरगिज़ दाखिल न होंगे, सो तू जा और तेरा रब, तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (24)

मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक मैं इख्तियार नहीं रखता सिवाए अपनी जान के और अपने भाई के, पस हमारे और हमारी नाफ़रमान कौम के दरमियान जुदाई डाल दे (फ़ैसला कर दे)। (25)

अल्लाह ने कहा पस यह सरज़मीन हराम कर दी गई उन पर चालीस साल, वह ज़मीन में भटकते फिरेंगे, तू नाफ़रमान कौम पर अफ़सोस न कर। (26)

उन्हें आदम (अ) के दो बेटों का हाले वाक़्ज़ी सुनाओ, जब दोनों ने कुछ नियाज़ पेश की तो उन में से एक की कुबूल कर ली गई और दूसरे से कुबूल न की गई, उस ने (भाई को) कहा मैं तुझे ज़रूर मार डालूँगा, उस ने कहा अल्लाह सिर्फ़ कुबूल करता है परहेज़गारों से। (27)

अलबत्ता अगर तू मेरी तरफ़ अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए बढ़ाएगा, मैं (फिर भी) अपना हाथ तेरी तरफ़ बढ़ाने वाला नहीं कि तुझे क़त्ल करूँ, वेशक मैं सारे ज़हान के परवरदिगार अल्लाह से डरता हूँ। (28)

वेशक मैं चाहता हूँ कि तू हासिल करे (ज़िम्मेदार हो जाए) मेरे गुनाह का और अपने गुनाह का, फिर तू जहन्नम वालों में से होजाए और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (29)

फिर उस को उस के नफ़्स ने अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर लिया, उस ने उस को क़त्ल कर दिया तो नुक़्सान उठाने वालों में से हो गया। (30)

फिर अल्लाह ने भेजा एक कव्वा ज़मीन कुरेदता ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। उस ने कहा हाए अफ़सोस! मुझ से इतना न हो सका कि उस कव्वे जैसा हो जाऊँ कि अपने भाई की लाश को छुपाऊँ, पस वह नादिम (पशेमाँ) होने वालों में से होगया। (31)

उस वजह से हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी एक जान को किसी जान के (बदले के) बग़ैर या मुल्क में फ़साद करने के बग़ैर क़त्ल किया तो गोया उस ने क़त्ल किया तमाम लोगों को, और जिस ने (किसी एक को) ज़िन्दा रखा (बचाया) तो गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (बचा लिया), और उन के पास आ चुके हमारे रसूल रौशन दलाइल के साथ, फिर उस के बाद उन में से अक्सर ज़मीन में हद से बढ़ जाने वाले हैं। (32)

यही सज़ा है (उन की) जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और सज़ाई करते हैं मुल्क में फ़साद बर्पा करने की कि वह क़त्ल किए जाएं या सूली दिए जाएं या उन के हाथ और पाऊँ काटे जाएं मुख़ालिफ़ जानिव से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ), या मुल्क बदर कर दिए जाएं, यह उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। (33)

मगर वह लोग जिन्हों ने उस से पहले तौबा कर ली कि तुम काबू पाओ उन पर, तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (34)

ऐ ईमान वालो! डरो अल्लाह से और उस की तरफ़ (उस का) कुर्व तलाश करो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (35)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया जो कुछ ज़मीन में है अगर सब का सब और उस के साथ और इतना ही उन के पास हो कि वह उस को क़ियामत के दिन अज़ाब के फ़िदये (बदला) में दें तो वह उन से कुबूल न किया जाएगा, और उन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (36)

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ							
से	वजह	उस	हम ने लिख दिया	पर	बनी इस्राईल	कि जो-जिस	
مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ							
कोई क़त्ल करे	कोई जान	किसी जान के बग़ैर	या फ़साद करना	ज़मीन (मुल्क) में	तो गोया	उस ने क़त्ल किया	
النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا							
लोग	तमाम	और जो-जिस	उस को ज़िन्दा रखा	तो गोया	उस ने ज़िन्दा रखा	लोग	तमाम
وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ							
आ चुके और उन के पास	हमारे रसूल	रौशन दलाइल के साथ	फिर	वेशक	अक्सर	उन में से	
بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمْسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾ إِنَّمَا جَزَأُا الَّذِينَ يُحَارِبُونَ							
उस के बाद	ज़मीन (मुल्क) में	हद से बढ़ने वाले	32	यही	सज़ा	जो लोग	जंग करते हैं
اللَّهِ وَرُسُولَهُ وَيَسْعُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا							
अल्लाह	और उस का रसूल (स)	और कोशिश करते हैं	जमीन (मुल्क) में	फ़साद करने	कि वह क़त्ल किए जाएं		
أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ							
या	वह सूली दिए जाएं	या	काटे जाएं	उन के हाथ	और उन के पाऊँ	से	एक दूसरे के मुख़ालिफ़ से
أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا							
या मुल्क बदर कर दिए जाएं	मुल्क से	यह	उन के लिए	रुसवाई	दुनिया में		
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا							
और उन के लिए	आख़िरत में	अज़ाब	बड़ा	33	मगर	वह लोग जिन्हों ने तौबा कर ली	
مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ							
उस से पहले	कि	तुम काबू पाओ	उन पर	तो जान लो	कि	अल्लाह	बख़्शने वाला
رَحِيمٌ ﴿٣٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا							
मेहरबान	34	ऐ	जो लोग ईमान लाए	डरो	अल्लाह	और तलाश करो	
إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ							
उस की तरफ़	कुर्व	और जिहाद करो	में	उस का रास्ता	ताकि तुम		
تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا							
फ़लाह पाओ	35	वेशक	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अगर	यह कि	उन के लिए	जो
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ							
ज़मीन में	सब का सब	और इतना	उस के साथ	कि फ़िदया (बदले में) दें	उस के साथ	से	अज़ाब
يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾							
क़ियामत का दिन	न	कुबूल किया जाएगा	उन से	और उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	36



يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخُرْجِينَ						
निकलने वाले	हालांकि नहीं वह	आग	से	वह निकल जाएं	कि	वह चाहेंगे
مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ (٣٧) وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا						
काट दो	और चोर औरत	और चोर मर्द	37	हमेशा रहने वाला	अज़ाब	और उन के लिए
أَيْدِيَهُمَا جِزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ						
ग़ालिब	और अल्लाह	से	इव्रत	उस की जो उन्होंने ने किया	सज़ा	उन दोनों के हाथ
حَكِيمٌ (٣٨) فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ						
तो वेशक अल्लाह	और इसलाह की	अपना जुल्म	बाद	से	पस जो-जिस तौबा की	38
يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (٣٩) أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ						
उसी की	अल्लाह	कि	क्या तू नहीं जानता	39	मेहरबान	वहशने वाला
مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ						
और वहशदे	जिसे चाहे	अज़ाब दे	और ज़मीन	आस्मानों	सल्तनत	
لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (٤٠) يَأْتِيهَا الرُّسُولُ						
रसूल (स)	ऐ	40	कादिर	हर शै	पर	और अल्लाह
لَا يَحْزُنُكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا						
उन्होंने ने कहा	जो लोग	से	कुफ़	में	भाग दौड़ करते हैं	जो लोग
أَمَنًا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا						
वह लोग जो यहूदी हुए	और से	उन के दिल	और मोमिन नहीं	अपने मुँह से (जमा)	हम ईमान लाए	
سَمْعُونَ لِكَذِبٍ سَمْعُونَ لِقَوْمٍ آخِرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ						
वह आप (स) तक नहीं आए	दूसरी	क़ौम के लिए	वह जासूस है	झूट के लिए	जासूसी करते हैं	
يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ						
कहते हैं	उस का ठिकाना	बाद	कलाम	वह फेर देते हैं		
إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخُذُوهُ وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا						
तो उस से बचो	यह तुम्हें न दिया जाए	और अगर	उस को कुबूल कर लो	यह	अगर तुम्हें दिया जाए	
وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا						
कुछ	अल्लाह	से	उस के लिए	तू हरगिज़ न आ सकेगा	गुमराह करना	और जो-जिस
أُولَئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ لَهُمْ						
उन के लिए	उन के दिल	पाक करे	कि	अल्लाह	नहीं चाहा	वह लोग जो
فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ (٤١)						
41	बड़ा	अज़ाब	आखिरत	में	और उन के लिए	दुनिया में

वह चाहेंगे कि वह आग से निकल जाएं हालांकि वह उस से निकलने वाले नहीं, और उन के लिए हमेशा रहने वाला (दाइमी) अज़ाब है। (37)

चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो यह सज़ा है उस की जो उन्होंने ने किया, इव्रत है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (38)

पस जिस ने तौबा की अपने जुल्म के बाद और इसलाह कर ली तो वेशक अल्लाह उस की तौबा कुबूल करता है, वेशक अल्लाह वहशने वाला मेहरबान है। (39)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही की है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की? वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस को चाहे वहशदे, और अल्लाह हर शै पर कादिर है। (40)

ऐ रसूल (स)! आप (स) को वह लोग ग़मगीन न करें जो कुफ़ में भाग दौड़ करते हैं, वह लोग जो अपने मुँह से कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि उन के दिल मोमिन नहीं, वह जो यहूदी हुए वह झूट के लिए जासूसी करते हैं, वह जासूस हैं एक दूसरी जमाअत के जो आप (स) तक नहीं आए, कलाम को फेर देते (बदल डालते) हैं उस के ठिकाने के बाद (ठिकाना छोड़ कर), कहते हैं अगर तुम्हें यह दिया जाए तो उस को कुबूल कर लो और अगर तुम्हें न दिया जाए तो उस से बचो, और जिस को अल्लाह गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तू अल्लाह के हाँ कुछ न कर सकेगा, यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने नहीं चाहा कि उन के दिल पाक करे, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आखिरत में बड़ा अज़ाब है। (41)

झूट के लिए जासूसी करने वाले, हARAM खाने वाले, पस अगर वह आप (स) के पास आएँ तो आप (स) उन के दरमियान फैसला कर दें या उन से मुँह फेर लें, और अगर आप (स) उन से मुँह फेर लें तो हरगिज़ आप (स) का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर आप (स) फैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ़ से फैसला करें, वेशक अल्लाह दोस्त रखता है इन्साफ़ करने वालों को। (42)

और वह आप (स) को कैसे मुन्सिफ़ बनाते हैं जबकि उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है, फिर उस के बाद वह फिर जाते हैं, और वह मानने वाले नहीं। (43)

वेशक हम ने नाज़िल की तौरात। उस में हिदायत और नूर है, उस के ज़रीआ हमारे नबी जो फ़रमांवरदार थे हुक्म देते थे यहूद को, और दर्वेश और उलमा (भी) इस लिए कि वह अल्लाह की किताब के निगहवान मुक़र्रर किए गए थे और उस पर निगरान थे, पस तुम लोगों से न डरो और मुझ (ही) से डरो और न हासिल करो मेरी आयतों के बदले थोड़ी कीमत, और जो उस के मुताबिक़ फैसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल किया है सो यही लोग काफ़िर हैं। (44)

और हम ने उस (किताब) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत है, और ज़ख़्मों का क़िसास (बदला) है, फिर जिस ने उस (क़िसास) को माफ़ कर दिया तो वह उस के लिए कफ़ारा है, और जो उस के मुताबिक़ फैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो यही लोग ज़ालिम हैं। (45)

سَمْعُونَ لِكَذِبٍ أَكْلُونَ لِلشُّحْتِ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَصْرِوْكَ شَيْئًا ۖ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾							
जासूसी करने वाले	झूट के लिए	बड़े खाने वाले	हराम	पस अगर	आप (स) के पास आएँ	तो फैसला कर दें आप (स)	
उन के दरमियान	या	मुँह फेर लें	उन से	और अगर	आप (स) मुँह फेर लें	तो हरगिज़ न	आप (स) का बिगाड़ सकेंगे
कुछ	और अगर	आप फैसला करें	तो फैसला करें	उन के दरमियान	इन्साफ़ से	वेशक अल्लाह	दोस्त रखता है
इन्साफ़ करने वाले	42	और कैसे	वह आप (स) को मुन्सिफ़ बनाएंगे	जबकि उन के पास	तौरात	उस में	
حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾							
अल्लाह का हुक्म	फिर	फिर जाते हैं	बाद	उस	और नहीं	वह लोग	
मानने वाले	43	वेशक हम	हम ने नाज़िल की	तौरात	उस में	हिदायत	और नूर
يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا ۚ وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنَ اللَّهَ ۚ							
हुक्म देते थे	उस के ज़रीआ	नबी (जमा)	जो फ़रमांवरदार थे	उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए (यहूद को)			
अल्लाह वाले (दर्वेश)	और उलमा	इस लिए कि	वह निगहवान किए गए	से (की)	अल्लाह की किताब		
और थे	उस पर	निगरान (मुहाफ़िज़)	पस न डरो	लोग	और डरो मुझ से		
وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾							
अल्लाह ने नाज़िल किया	सो यही लोग	वह	काफ़िर (जमा)	44	और हम ने लिखा (फ़र्ज़ किया)	उन पर	
فِيهَا أَنْ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾							
उस में	कि	जान	जान के बदले	और आँख	आँख के बदले	और नाक	
नाक के बदले	और कान	कान के बदले	और दाँत	दाँत के बदले	और ज़ख़्मों		
बदला	फिर जो - जिस	माफ़ कर दिया	उस को	तो वह	कफ़ारा	उस के लिए	और जो
फैसला नहीं करता	उस के मुताबिक़ जो	नाज़िल किया	अल्लाह	तो यही लोग	वह	ज़ालिम (जमा)	45

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا						
और हम ने	पर	उन के	ईसा (अ)	इब्ने मरयम	तस्दीक	उस की जो
पीछे भेजा		निशाने कदम		करने वाला		
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۚ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ						
उस से पहले	से	तौरात	और हम ने	इंजील	उस में	और नूर
			उसे दी		हिदायत	
وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً						
और तस्दीक	उस की जो	उस से पहले	से	तौरात	और	और नसीहत
करने वाली				हिदायत		
لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾ وَلِيَحْكُمَ أَهْلَ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۖ وَمَنْ						
परहेज़गारों	46	और फैसला	इंजील वाले	उस के	नाज़िल	और
के लिए	करें		साथ जो	अल्लाह	किया	जो
لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤٧﴾ وَأَنْزَلْنَا						
फैसला नहीं करता	उस के	नाज़िल	अल्लाह	तो यही	वह	और हम ने
मुताबिक जो	मुताबिक जो	किया		लोग	फासिक (नाफरमान)	नाज़िल की
إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ						
आप की	किताब	सच्चाई के	तस्दीक	उस की जो	उस से पहले	से
तरफ़		साथ	करने वाली			किताब
وَمُهِمَّنَا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ						
और निगहवान	उस पर	सो फैसला करें	उन के	उस से	नाज़िल	और न पैरवी करें
ओ मुहाफिज़			दरमियान	जो	किया	अल्लाह
أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرْعَةً						
उन की	उस से	तुम्हारे पास	से	हक	हर एक	दस्तूर
खाहिशात		आगया			के लिए	तुम में से
وَمِنْهَا جَا ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ						
और रास्ता	और	अल्लाह चाहता	तो तुम्हें	उम्मत	वाहिदा (एक)	और
	अगर		कर देता			लेकिन
فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَمِنْكُمْ						
में	जो	उस ने	उस से	पस सबक़त	नेकियां	वह तुम्हें
	दिया	करो		करो		बतलादेगा
بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِنْ أَحْكَمْتُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ						
जो	तुम थे	उस में	इख़तिलाफ़ करते	48	और फैसला करें	अल्लाह
					और	नाज़िल किया
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا						
और न चलो	उन की	और उन से	कि	वहका	से	जो
	खाहिशें	बचते रहो		न दें		वाज़ (किसी)
أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ						
नाज़िल	अल्लाह	आप की	फिर	वह सुँह	तो	सिर्फ़
किया	तरफ़	अगर	फेर लें	जान लो	चाहता है	अल्लाह
بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٤٩﴾ أَفَحُكْمَ						
वसबव	उन के	और	से	लोग	नाफरमान	49
वाज़	गुनाह	वशक	अक्सर			क्या हुक़म
الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾						
जाहिलियत	वह चाहते	और	से	हुक़म	लोगों के	यकीन
	हैं	किस	बेहतर	अल्लाह	लिए	रखते हैं
50						

और हम ने ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को उन के निशाने कदम पर भेजा, उस की तस्दीक करने वाला जो उस (ईसा (अ) से पहले तौरात से थी, और हम ने उसे इंजील दी, उस में हिदायत और नूर है और उस की तस्दीक करने वाली जो उस से पहले तौरात से थी और परहेज़गारों के लिए हिदायत ओ नसीहत थी। (46)

और इंजील वाले उस के साथ फैसला करें जो अल्लाह ने उस में नाज़िल किया, और जो उस के मुताबिक़ फैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो यही लोग फ़ासिक (नाफ़रमान) हैं। (47)

और हम ने आप (स) की तरफ़ किताब सच्चाई के साथ नाज़िल की अपने से पहली किताबों की तस्दीक करने वाली और उस पर निगहवान ओ मुहाफिज़, सो उन के दरमियान फैसला करें उस से जो अल्लाह ने नाज़िल किया और उन की खाहिशात की पैरवी न करें उस के बाद (जबकि) तुम्हारे पास हक़ आगया, हम ने मुकर्रर किया है तुम में से हर एक के लिए (अलग) दस्तूर और (जुदा) रास्ते, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें उम्मत वाहिदा (एक उम्मत) कर देता, लेकिन (वह चाहता है) ताकि वह तुम्हें उस से आजमाए जो उस ने तुम्हें दिया है, पस नेकियों में सबक़त करो, तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है वह तुम्हें बतला देगा जिस बात में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (48)

और उन के दरमियान फैसला करें उस से जो नाज़िल किया अल्लाह ने, और उन कि खाहिशों पर न चलो और उन से बचते रहो कि तुम्हें वहका न दें किसी ऐसे (हुक़म) से जो नाज़िल किया है अल्लाह ने आप (स) की तरफ़, फिर अगर वह सुँह फेर लें तो जान लो कि अल्लाह सिर्फ़ यही चाहता है कि उन्हें (सज़ा) पहुँचाए उन के वाज़ गुनाहों के सबब, और उन में से अक्सर लोग नाफ़रमान हैं। (49)

क्या वह (दौरे) जाहिलियत का हुक़म (रस्म ओ रिवाज़) चाहते हैं? और अल्लाह से बेहतर हुक़म किस का है उन लोगों के लिए जो यकीन रखते हैं? (50)

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, उन में से बाज़ दोस्त हैं बाज़ के (एक दूसरे के दोस्त हैं) और तुम में से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो बेशक वह उन में से होगा, बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (51)

पस तू देखेगा जिन लोगों के दिलों में रोग है वह उन (यहूद ओ नसारा) की तरफ़ दौड़ते हैं, वह कहते हैं हमें डर है कि हम पर गर्दिशे (ज़माना) न आजाए, सो क़रीब है कि अल्लाह फ़तह लाए या अपने पास से कोई हुक़्म (लाए) तो वह अपने दिलों में जो छुपाते थे उस पर पछताते रह जाएं। (52)

और मोमिन कहेंगे क्या यह वही लोग हैं जो अल्लाह की पक्की क़स्में खाते थे कि वह तुम्हारे साथ है। उन के अमल अकारत गए, पस वह नुक्सान उठाने वाले (हो कर) रह गए। (53)

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़नक़रीब अल्लाह ऐसी क़ौम लाएगा जिन्हें वह मेहबूब रखता है और वह उसे मेहबूब रखते हैं, वह मोमिनों पर नरम दिल है काफ़िरों पर ज़बरदस्त है, अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते, यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह जिस को चाहता है देता है, और अल्लाह वुस्त्रत वाला, इल्म वाला है। (54)

तुम्हारे रफ़ीक़ तो सिर्फ़ अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले हैं, और वह जो नमाज़ काइम करते हैं और ज़कात देते हैं और (अल्लाह के हुज़ूर) झुकने वाले हैं। (55)

जो दोस्त रखें अल्लाह और उस के रसूल (स) को और ईमान वालों को, तो बेशक अल्लाह की जमाअत ही (सब पर) ग़ालिब होगी। (56)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۚ						
ऐ	जो लोग	ईमान लाए	न बनाओ	यहूद	और नसारा	दोस्त
بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ						
उन में से बाज़	दोस्त	बाज़ (दूसरे)	और जो	उन से दोस्ती रखेगा	तुम में से	तो बेशक वह
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِينَ فِي						
बेशक अल्लाह	हिदायत नहीं देता	लोग	ज़ालिम	51	पस तू देखेगा	वह लोग जो
قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَنْ						
उन के दिल	रोग	दौड़ते हैं	उन में (उन की तरफ़)	कहते हैं	हमें डर है	कि
تُصِيبَنَا دَآيِرَةٌ ۖ فَعَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهِ						
हम पर (न) आजाए	गर्दिश	सो क़रीब है	कि	लाए फ़तह	या कोई हुक़्म	से अपने पास
فَيُضْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ نَدِمِينَ ﴿٥٢﴾ وَيَقُولُ						
तो रह जाएं	पर	जो	वह छुपाते थे	में	अपने दिल (जमा)	पछताने वाले
الَّذِينَ آمَنُوا أَهْلَاءَ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ إِنَّهُمْ						
जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	क्या यह वही हैं	जो लोग	क़स्में खाते थे	अल्लाह की	पक्की	अपनी क़स्में
لَمَعَكُمْ ۖ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَاصْبَحُوا خُسْرِينَ ﴿٥٣﴾ يَأَيُّهَا						
तुम्हारे साथ	अकारत गए	उन के अमल	पस रह गए	नुक्सान उठाने वाले	53	ऐ
الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِيَ اللَّهُ بِقَوْمٍ						
जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	जो	फिरेगा	तुम से	से	अपना दीन	तो अ़नक़रीब
يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۖ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۗ						
वह उन्हें मेहबूब रखता है	और वह उसे मेहबूब रखते हैं	नर्म दिल	पर	मोमिनीन	ज़बरदस्त	पर
يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۚ ذَلِكَ						
जिहाद करते हैं	में रास्ता	अल्लाह	और नहीं डरते	मलामत	कोई मलामत करने वाला	यह
فَضَّلَ اللَّهُ يُوتِيهِ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ						
फ़ज़ल	अल्लाह	वह देता है	जिसे चाहता है	और अल्लाह	वुस्त्रत वाला	इल्म वाला
اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ						
अल्लाह	और उस का रसूल	और जो लोग ईमान लाए	जो लोग	काइम करते हैं	नमाज़	
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ زَكَاةُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ						
और देते हैं	ज़कात	और वह	रुकुअ करने वाले	55	और जो	दोस्त रखते हैं
وَرَسُولَهُ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾						
और उस का रसूल	और जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	तो बेशक	तो	अल्लाह की जमाअत	वह	ग़ालिब (जमा)



يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ					
तुम्हारा दीन	जो लोग ठहराते हैं	न बनाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)	जो लोग	ऐ
هُزُوا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ					
तुम से कब्ल	किताब दिए गए	वह लोग - जो	से	और खेल	एक मज़ाक
وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾					
57	ईमान वाले	अगर तुम हो	अल्लाह	और डरो	दोस्त और काफ़िर
وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُواً وَلَعِبًا ذَٰلِكَ					
यह	और खेल	एक मज़ाक	वह उसे ठहराते हैं	नमाज़	तरफ़ (लिए)
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ يَٰٓأَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنقِمُونَ					
क्या ज़िद रखते हो	ऐ अहले किताब	आप (स) कह दें	58	अक़ल नहीं रखते हैं (बेअक़ल)	लोग इस लिए कि वह
مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلُ					
उस से कब्ल	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो
وَأَنْ أَكْثَرُكُمْ فَسِقُونَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذَٰلِكَ					
उस	से	बद तर	तुम्हें बतलाऊँ	क्या	आप कह दें
مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ					
और बना दिया	उस पर	और गुज़ब किया	अल्लाह	उस पर लानत की	जो - जिस अल्लाह
مِنْهُمْ الْقِرْدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتِ أُولَٰئِكَ شَرٌّ					
बद तरीन	वही लोग	तागूत	और गुलामी	और खिन्ज़ीर (जमा)	बन्दर (जमा)
مَكَانًا وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٦٠﴾ وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا					
कहते हैं	तुम्हारे पास आएँ	और जब	60	रास्ता	सीधा
آمَنًا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ					
और अल्लाह	उस (कुफ़) के साथ	निकले चले गए	और वह	कुफ़ की हालत में	हालांकि वह दाख़िल हुए (आएँ)
أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾ وَتَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ					
वह भाग दौड़ करते हैं	उन से	बहुत	और तू देखेगा	61	छुपाते
فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَآكَلِهِمُ الشَّحْتِ لِبِئْسَ مَا كَانُوا					
जो वह	बुरा है	हराम	और उन का खाना	और ज़ियादती	गुनाह
يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبُّنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ					
से	और उल्मा	अल्लाह वाले (दर्वेश)	क्यों उन्हें मना नहीं करते	62	कर रहे हैं
قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَآكَلِهِمُ الشَّحْتِ لِبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾					
63	वह कर रहे हैं	जो	बुरा है	हराम	और उन का खाना

ऐ ईमान वालो! उन लोगों को जो तुम्हारे दीन को एक मज़ाक और खेल ठहराते हैं (यानी वह) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और काफ़िरों को दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57)

और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो (अज़ान देते हो) तो वह उसे एक मज़ाक और खेल ठहराते हैं, यह इस लिए है कि वह लोग अक़ल नहीं रखते। (58)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! क्या तुम हम से यही ज़िद रखते हो (इन्तिकाम लेते हो) कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उस से कब्ल नाज़िल किया गया, और यह कि तुम में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (59)

आप (स) कह दें क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ उस से बदतर जज़ा (किस की है) अल्लाह के हाँ (वही) जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर गुज़ब किया और उन में से बना दिए बन्दर और खिन्ज़ीर, और (उन्होंने) तागूत (सरकश - शैतान) की गुलामी की। वही लोग बदतरीन दरजे में हैं, और सीधे रास्ते से सब से ज़ियादा बहके हुए हैं। (60)

और जब तुम्हारे पास आएँ तो कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि आए थे कुफ़ की हालत में और निकले तो कुफ़ के साथ, और अल्लाह खूब जानता है जो वह छुपाते हैं। (61)

और तू देखेगा उन में से बहुत से भाग दौड़ करते हैं गुनाह और ज़ियादती में और हराम खाने में, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (62)

उन्हें क्यों मना नहीं करते दर्वेश और उल्मा गुनाह (की बात) कहने से और उन के हराम खाने से, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (63)

और यहूद कहते हैं अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है (अल्लाह बखील है), बाँध दिए जाएं उन के हाथ, और जो उन्होंने ने कहा उस से उन पर लानत की गई। बल्कि अल्लाह के हाथ कुशादा हैं, वह खर्च करता है जैसे वह चाहता है, और जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ से नाज़िल किया गया उस से उन में से बहुतों की सरकशी ज़रूर बढ़ेगी और कुफ़, और हम ने उन के अन्दर कियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और बैर डाल दिया है, वह जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है, और वह मुल्क में फ़साद करते हुए दौड़ते हैं (फ़साद बर्पा करते हैं), और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता। (64)

और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम अलबत्ता उन से उन की बुराइयां दूर कर देते और नेमत के बागात में ज़रूर दाखिल करते। (65)

और अगर वह तौरेत और इंजील काइम रखते और जो उन के रब की तरफ से उन पर नाज़िल किया गया तो वह खाते अपने ऊपर से और अपने पाऊँ के नीचे से, उन में से एक जमाअत मियांन रो है, और उन में से अक्सर बुरे काम करते हैं। (66)

ऐ रसूल (स) पहुँचादो जो आप (स) के रब की तरफ से आप (स) पर नाज़िल किया गया है, और अगर यह न किया तो (गोया) आप (स) ने उस का पैगाम नहीं पहुँचाया, और अल्लाह आप (स) को लोगों से बचा लेगा, वेशक अल्लाह कौमे कुफ़ार को हिदायत नहीं देता। (67)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम कुछ भी नहीं हो जब तक तुम (न) काइम करो तौरात और इंजील और जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और ज़रूर बढ़ जाएगी उन में से अक्सर की सरकशी और कुफ़ उस की वजह से जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ से नाज़िल किया गया है तो आप (स) अफ़सोस न करें (ग़म न खाएं) कौमे कुफ़ार पर। (68)

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلَعْنُوا بِمَا							
उस से जो	और उन पर लानत की गई	उन के हाथ	बाँध दिए जाएं	बन्धा हुआ	अल्लाह का हाथ	यहूद	और कहा (कहते हैं)
قَالُوا بَلْ يَئِذْهُ مَبْسُوطَتْنِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا							
बहुत से	और ज़रूर बढ़ेगी	वह चाहता है	जैसे	वह खर्च करता है	कुशादा है	उस (अल्लाह) के हाथ	बल्कि उन्होंने ने कहा
مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا وَالْقَيْنَا بَيْنَهُمُ							
उन के अन्दर	और हम ने डाल दिया	और कुफ़	सरकशी	आप का रब	से	आप की तरफ	जो नाज़िल किया गया
الْعَدَاوَةِ وَالْبَغْضَاءِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ كُلَّمَا أَوقَدُوا نَارًا							
आग	भड़काते हैं	जब कभी	कियामत का दिन	तक	और बुग़ज़ (बैर)	दुश्मनी	
لِلْحَرْبِ أَطْفَاَهَا اللَّهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ							
और अल्लाह	फ़साद करते	ज़मीन (मुल्क) में	और वह दौड़ते हैं	अल्लाह	उसे बुझा देता है	लड़ाई की	
لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا							
अलबत्ता हम दूर कर देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	अहले किताब	यह कि	और अगर	64	फ़साद करने वाले
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَادْخَلْنَاهُمْ جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ							
काइम रखते	वह	और अगर	65	नेमत के बागात	और ज़रूर हम उन्हें दाखिल करते	उन की बुराइयां	उन से
التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَا كُلُّوا مِنْ							
से	तो वह खाते	उन का रब	से	उन की तरफ (उन पर)	नाज़िल किया गया	और जो	और इंजील
فَوْقِهِمْ وَمَنْ تَحْتَ أَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ							
और अक्सर	सीधी राह पर (मियांन रो)	एक जमाअत	उन से	अपने पाऊँ	नीचे	और से	अपने ऊपर
مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ﴿٦٦﴾ يَا أَيُّهَا الرُّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ							
तुम्हारी तरफ (तुम पर)	जो नाज़िल किया गया	पहुँचा दो	रसूल (स)	ऐ	66	जो वह करते हैं	बुरा
مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ							
आप (स) को बचाले गा	और अल्लाह	उस का पैगाम	आप (स) ने पहुँचाया	तो नहीं	यह न किया	और अगर	तुम्हारा रब
مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٦٧﴾ قُلْ							
आप कह दें	67	कौमे कुफ़ार	हिदायत नहीं देता	वेशक अल्लाह	लोग	से	
يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا							
और जो	और इंजील	तौरात	तुम काइम करो	जब तक	किसी चीज़ पर (कुछ भी)	तुम नहीं हो	ऐ अहले किताब
أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ							
आप की तरफ (आप पर)	जो नाज़िल किया गया	उन से	अक्सर	और ज़रूर बढ़ जाएगी	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ (तुम पर)
مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾							
68	कौमे कुफ़ार	पर	तो अफ़सोस न करें	और कुफ़	सरकशी	आप के रब की तरफ से	

وَقَالَتِ الْيَهُودُ

يَا أَيُّهَا الرُّسُولُ

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَالنَّصَارَى																			
और नसारा		और साबी		यहूदी हुए		और जो लोग		जो लोग ईमान लाए		वेशक									
مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ																			
और न वह		उन पर		तो कोई खौफ नहीं		अच्छे		और उस ने अमल किए		और आखिरत के दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो						
يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَارْسَلْنَا إِلَيْهِمْ																			
उन की तरफ		और हम ने भेजे		बनी इसाईल		पुख्ता अहद		हम ने लिया		वेशक	69	ग़मगीन होंगे							
رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا																			
झुटलाया		एक फ़रीक		उन के दिल		न चाहते थे		उस के साथ जो		कोई रसूल	आया उन के पास	जब भी	रसूल (जमा)						
وَفَرِيقًا يَّقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوا ۖ إِلَّا تَكُونُ فِتْنَةً فَاعْمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ																			
तो		और बहरे हो गए		सो वह अन्धे हुए		कोई ख़राबी		कि न होगी		और उन्होंने ने गुमान किया		70	क़त्ल कर डालते	और एक फ़रीक					
تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۖ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا																			
जो		देख रहा है		और अल्लाह		उन से		अक्सर		और बहरे होगए		अँधे होगए	फिर	उन की	अल्लाह	तौबा कुबूल की			
يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ																			
इब्ने मरयम		मसीह (अ)		वही		अल्लाह		तहकीक		वह जिन्होंने ने कहा		वेशक काफ़िर हुए	71	वह करते हैं					
وَقَالَ الْمَسِيحُ يَبْنَىٰ إِسْرَءِيلَ ااعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ																			
वेशक वह		और तुम्हारा रब		मेरा रब		अल्लाह		इबादत करो		ऐ बनी इसाईल		मसीह (अ)		और कहा					
مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ																			
दोज़ख़		और उस का ठिकाना		जन्नत		उस पर		अल्लाह ने हराम कर दी		तो तहकीक		अल्लाह का		शरीक ठहराए		जो			
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ																			
तीन का		वेशक अल्लाह		वह लोग जिन्होंने ने कहा		अलबत्ता काफ़िर हुए		72	मददगार		कोई		ज़ालिमों के लिए		और नहीं				
ثَلَاثَةٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ																			
वह कहते हैं		उस से जो		वह बाज़ न आए		और अगर		वाहिद		माबूद		सिवाए		माबूद		कोई	और नहीं	तीसरा (एक)	
لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ أَفَلَا يَتُوبُونَ																			
पस वह क्यों तौबा नहीं करते		73	दर्दनाक		अज़ाब		उन से		जिन्होंने ने कुफ़ किया		ज़रूर पहुँचेगा								
إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ																			
इब्ने मरयम		मसीह (अ)		नहीं		74	मेहरबान		बख़्शने वाला		और अल्लाह		और उस से बख़्शिश मांगते		अल्लाह की तरफ़ (आगे)				
إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۖ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَنِ																			
खाते थे		वह दोनों		सिददीका (सच्ची - वली)		और उस की माँ		रसूल		उस से पहले		गुज़र चुके		रसूल		मगर			
الطَّعَامِ ۖ أَنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظُرْ أَتَىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾																			
75	औन्धे जा रहे हैं		कहाँ (कैसे)		देखो		फिर		आयात (दलाइल)		उन के लिए		हम बयान करते हैं		कैसे		देखो		खाना

वेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी (सितारा परस्त) और नसारा, जो भी ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और अच्छे अमल करे तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (69)

वेशक हम ने बनी इस्राईल से पुख्ता अहद लिया और हम ने उन की तरफ़ रसूल भेजे, जब भी उन के पास कोई रसूल आया उस (हुक़्म) के साथ जो उन के दिल न चाहते थे तो एक फ़रीक को झुटलाया और एक फ़रीक को क़त्ल कर डाला, (70) और उन्होंने ने गुमान किया कि कोई ख़राबी न होगी, सो वह अन्धे हो गए और वहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें माफ़ किया, फिर उन में से अक्सर अन्धे और वहरे हो गए, सो अल्लाह देख रहा है जो वह करते हैं। (71)

वेशक वह काफ़िर हुए जिन्होंने ने कहा तहकीक अल्लाह वही है मसीह (अ) इब्ने मरयम, और मसीह (अ) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, वेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो तहकीक अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (72)

अलबत्ता वह लोग काफ़िर हुए जिन्होंने ने कहा वेशक अल्लाह तीन में का एक है। और माबूद वाहिद के सिवा कोई माबूद नहीं, और अगर वह उस से बाज़ न आए जो वह कहते हैं तो उन में से जिन्होंने ने कुफ़ किया उन्हें ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा। (73)

और वह तौबा क्यों नहीं करते अल्लाह के आगे और उस से गुनाहों की बख़्शिश क्यों नहीं मांगते? और अल्लाह बख़शने वाला मेहरबान है। (74)

मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) नहीं मगर रसूल (वह सिर्फ़ एक रसूल है) उस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं, और उस की माँ सिददीका (सच्ची - वली) है, वह दोनों खाना खाते थे, देखो! हम उन के लिए कैसे दलाइल बयान करते हैं, फिर देखो ये कैसे औन्धे जा रहे हैं? (75)

कह दें: क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारे लिए मालिक नहीं किसी नुकसान का और न नफा का, और अल्लाह ही सुनने वाला जानने वाला है। (76)

कह दें: ऐ अहले किताब! अपने दीन में नाहक मुवालिगा न करो और उन लोगों की खाहिशात की पैरवी न करो जो उस से कबल गुमराह हो चुके हैं और उन्होंने ने बहुत सों को गुमराह किया और (खुद भी) बहक गए सीधे रास्ते से। (77)

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़ किया वह मलऊन हुए दाऊद (अ) और ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) की ज़बानी, यह इस लिए कि उन्होंने ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (78)

वह एक दूसरे को बुरे काम से जो वह कर रहे थे न रोकते थे, अलबत्ता बुरा है जो वह करते थे। (79)

आप (स) देखेंगे उन में से अक्सर काफ़िरों से दोस्ती करते हैं।

अलबत्ता बुरा है जो आगे भेजा खुद उन्होंने ने अपने लिए कि उन पर अल्लाह ग़ज़वनाक हुआ और वह हमेशा अज़ाब में रहने वाले हैं। (80)

और अगर (काश) वह अल्लाह और रसूल पर ईमान ले आते और उस पर जो उस की तरफ़ नाज़िल किया गया तो उन्हें दोस्त न बनाते लेकिन उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (81)

तुम सब लोगों से ज़ियादा दुश्मन पाओगे अहले ईमान (मुसलमानों) का यहूद को और मुशरिकों को, और अलबत्ता तुम मुसलमानों के लिए दोस्ती में सब से क़रीब पाओगे (उन लोगों को) जिन लोगों ने कहा हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में अ़लम और दर्वेश है, और यह कि वह तकबुर नहीं करते। (82)

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا								
कह दें	क्या तुम पूजते हो	से	अल्लाह के सिवा	जो नहीं	मालिक	तुम्हारे लिए	नुकसान	और न नफा
وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يَاهَا اَلْكُتُبِ لَا تَغْلُوا فِي								
और अल्लाह	वही	सुनने वाला	जानने वाला	76	कह दें	ऐ अहले किताब	गुलू (मुवालिगा) न करो	में
دِينَكُمْ غَيْرِ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ								
अपना दीन	नाहक	और न	पैरवी करो	खाहिशात	वह लोग	गुमराह हो चुके	इस से कबल	
وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾ لَعَنَ								
और उन्होंने ने गुमराह किया	बहुत से	और भटक गए	से	सीधा	रास्ता	77	लानत किए गए (मलऊन हुए)	
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى								
जिन लोगों ने कुफ़ किया	से	बनी इस्राईल	पर	ज़वान	दाऊद (अ)	और ईसा (अ)		
ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ								
इब्ने मरयम	यह	इस लिए कि	उन्होंने ने नाफ़रमानी की	और वह थे	हद से बढ़ते	78	एक दूसरे को न रोकते थे	
عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾								
से	बुरे काम	वह करते थे	अलबत्ता बुरा है	जो वह थे	करते	79		
تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ								
आप (स) देखेंगे	अक्सर	उन से	दोस्ती करते हैं	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	अलबत्ता बुरा है	जो आगे भेजा		
لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ								
अपने लिए	उन की जानें	कि	ग़ज़वनाक हुआ अल्लाह	उन पर	और अज़ाब में	वह		
خَالِدُونَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنْزِلَ								
हमेशा रहने वाले	80	और अगर	वह ईमान लाए	अल्लाह	और रसूल	और जो	नाज़िल किया गया	
إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ								
उस की तरफ़	न	उन्हें बनाते	दोस्त	और लेकिन	अक्सर	उन से		
فَاسْقُونِ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا								
नाफ़रमान	81	तुम ज़रूर पाओगे	सब से ज़ियादा	लोग	दुश्मनी	अहले ईमान (मुसलमानों) के लिए		
إِلَى الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً								
यहूद	और जिन लोगों ने शिर्क किया	और अलबत्ता ज़रूर पाओगे	सब से ज़ियादा क़रीब	दोस्ती				
لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَضْرِيْ ذَٰلِكَ بِأَنَّ								
उन के लिए जो	ईमान लाए (मुसलमान)	जिन लोगों ने कहा	हम	नसारा	यह	इस लिए कि		
مِنْهُمْ فَسَيَسِينُ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾								
उन से	अ़लम	और दर्वेश	और यह कि वह	तकबुर नहीं करते	82			